भगवत कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 19 अंक : 10	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चन्दा : 50.00
शनिवार 26/10/96	अक्टूबर-1996	प्रति अंक : 5.00

ब्रह्मप्रवाह

नूतन वर्ष के पवित्र मंगलकारी दिन की प्रातःकाल को, मंगलाचरण के प्रारम्भ में प्रभु का बालक बनकर, प्रातः स्मरणीय, अमाप और असीम, करुणा और प्रेम के सागर समान गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज तथा योगीजी महाराज का स्मरण करके, उमंग व उत्साह से चैतन्य जीवन जीना शुरू करें।

प.पू. योगी बापा अत्यंत सुंदरतम् चीजें-अक्षरधाम और समृद्ध जीवन केवल मौज व बक्षिश रूप में दे गए हैं। आज उसे संभाल रखने का दृढ़ संकल्प करें।

– इस दिव्य ख्याल के दरवाजे पर रहकर, सतत् बहते और विकसित चैतन्यप्रवाह में गतिस्थिरिता रखकर, आपसी दिव्य एकता स्थापित करने सभी अति बड़े पुरुषों को दिल की सच्चाई से प्रार्थना करें।

– उनके ही बल और संकल्प से सम्पूर्ण समर्पण करके दिव्यगुण उपलब्ध करें।

– व्यवहार के और सत्संग के सभी भिन्न-भिन्न प्रसंगों में अक्षरधाम के सच्चे सुख, शांति और आनन्द प्राप्त होते जाएं ऐसी स्थितप्रज्ञता सहज ही हमेशा टिकाये रखें।

यह बात हमारे ऊपर ही लागू करके, साथीदारों के साथ प्रेम से और सरलता से प्रवृत्ति करते रहें उसके लिए महामंत्र है– 'रुको, रुको, रुको और फिर चलो, दौड़ो और जब थको तब मन का विश्राम पूरा करने के बाद किसी भी प्रकार की क्रिया का आरंभ करो। यूं इंद्रियां-मन या जीव की गति जानकर तीन बार रुको, रुको, रुको और फिर चलो।' परिणामस्वरूप जीवन में साक्षीभाव वाली गतिस्थिरता और दिव्य कल्याणकारी गुणों से समन्वय वाली स्थितप्रज्ञता प्राप्त होगी।

हम सब खूब भाग्यशाली हैं। हमें प्रगट प्रभु मिले, आत्मीय समाज मिला, उसकी प्राप्ति का आनंद जरूर किया करें। बड़े पुरुष की दृष्टि में आए सो जीव जाग्रत हुआ, अनन्यभाव होने पर वच. ग.म. 8 और वच. ग.म. 49 के मुताबिक हमारा योगयज्ञ और ज्ञानयज्ञ पूरा हुआ।

अब पहला प्रश्न यह समझना कि–

हमारा संधान भगवान के स्वरूप से पक्का ही है?

बिना पर्दे का है?

हमारा संबंध यदि पक्का ही होगा तो...

– व्यवहार बाधारूप बनेगा नहीं।

– वच.ग. अंत्य. 11 के मुताबिक निर्विकल्प समाधि का सुख अखंड मिलता ही रहेगा।

– विपरीत प्रसंग आने पर भीतर में तनिक भी देशकाल महसूस नहीं होगा।

– भावना में फर्क पड़ेगा नहीं।

– उद्वेग, परेशानी, विक्षेप या अभाव में न पड़कर तुरन्त पीछे हठ कर लेंगे।

– उदासी चली जाएगी।

– गतिस्थिरता वाली स्थितप्रज्ञता आ जाएगी।

– 'State of the mind'- हमारे मन का स्वरूप समत्वभाव वाला रहेगा, जो कि शांति के बाद की अशांति में से फिर सच्ची शांति लौटायेगा।

तीन बार रुकना किसलिए?

क्योंकि–

किसी विषय की आसक्ति

या

हमारे किसी कोने में रहा-बचा कोई अज्ञान,
भ्रामिक ख्याल
या
गलतफहमी को लेकर खड़ा हुआ–
उल्टा पक्ष, तारतम्यता या अच्छे-बुरे के द्वंद्वों
हमें उबड़-खाबड़ में ले जाकर धीरे-धीरे राजमार्ग से लुढ़का कर गहरी खाई में फेंक देते हैं। फिर योगमाया के शिकंजे में फंसकर, टकराकर, पछाड़ खाकर, परेशान होकर, मायूस रहकर, धीरे-धीरे वापिस आ जाते हैं। यूं हमारा आनंद आता-जाता रहता है। शांति चली जाती है।

हमारी स्वरूपलक्षी कोई मान्यता में से उत्पन्न भेदभाव दूर करने और तत्व से जैसे हैं वैसे भगवान और संत को पहचानने की कसर दूर करने, पल-पल की अंतर्दृष्टि और प्रार्थना ही काम आएगी। **अंतर्दृष्टि यानि आंख बंद कर लेनी वह नही; लेकिन हृदय में जहां भीतर धबक-धबक होती है, उसके पार खूब-खूब भीतर में उतरकर अंतरात्मा में स्वरूपधारणा करना-वह है।** दिल की सच्चाई और प्रमाणिकता से पांच ही मिनिट यदि सतत् स्वरूप धारणा करेंगे तो प्रकाश होगा, सहज ही प्रभु प्रेरणा होगी।

संबंध तो है ना? सच में संधान पक्का ही है? तो होना ही चाहिए। वच. ग.प्र. 16 के मुताबिक हमारा दोष होगा तो पता चलने पर टल जाएगा। यदि नहीं होगा, तो लीला ही दिखाई देगी। आनंद की लहरियां उठेंगी।

बड़े पुरुष की प्रसन्नता प्राप्त करने ही सारी सेवा, भक्ति, क्रिया या सत्संग करने की दृष्टि रखनी है। वे देने ही बैठे हैं। मांगों अंतर से मांगो। वे तुरंत देंगे ही। लेकिन मन को वह चाहिए नहीं। पुराने रुढ़ि-तौर तरीकों की जड़ को मन का ही राज्य जंचता है। सो, क्षणभर में भूलकर-बड़े पुरुष के पास भी पल-पल बोल पड़ते हैं,
दौड़ा-भागी करते हैं
और
दूसरे को उपदेश देने बैठ जाते हैं
कटाक्ष में या अनजाने में दूसरे का दोष देखते रहते हैं।
यहां दिव्यता खंडित हो गई,
पावर हाउस बंद हो गया।
अभाव-अवगुण में पड़े यही हमारी मृत्यु है।
सो, उसमें पड़ने से पहले या मनमुखी बंदर के अधीन होने से पहले, प्रभु की सर्वोपरि सत्ता **अस्तित्व में ऐसी आस्तिकभाव वाली उत्कृष्ठा श्रद्धा रखकर** पुकार करना। प्रभु प्रगट होकर, अंतर का द्वार खोलकर स्थितप्रज्ञ दशा में अखंड रखेंगे।

रात को दो-तीन मिनिट प्रायश्चितरूप प्रार्थना कर लेनी तो प्रातःकाल का मंगलाचरण और संध्या भजन सभी प्रकार से दिव्य ज्ञान समाधि में ही रखेगा। वह स्वतंत्रता और निर्दोषता का मंत्र है। सभी को वह जल्दी ही सिद्ध हो, यही सभी अति बड़े पुरुषों के चरणों में गद्‌गद् कंठ से प्रार्थना। सभी आनंद करो रे, आनंद करो !
क्योंकि, प्रगट प्रभु मिले हैं। ऐसे मुक्तों का दिव्य समाज मिला है।
आज तो आनंद करो। कल आने वाली नहीं।

प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी और सभी संतों के संकल्प से आपको अखंड वर्तमान में ही जीवन जीने की यह कला-सदा सुखी रहने की यह कला आसान बने, यही नूतन वर्ष के शुभाशीष।

फिर से, अंत में-दो महामुक्तों के साथ मैत्रीभाव दृढ़ करोगे तो जय, जय में से परम जय ! परमविजेता बनकर सम्राट के राजपुत्र जैसा निर्दोष जीवन जीया जाएगा।

फिर से गुरुचरणों में तुम सब की ओर से यही प्रार्थना...
सभी सुखी रहो, सुखी रहो... आनंद करो, आनंद करो...
शुभं भवतु, शुभं भवतु, शुभं भवतु... जय स्वामिनारायण

– प.पू. काकाजी महाराज
संवत् 2033

✡✡✡✡✡

बृहद् गुणातीत समाज के सरताज...
प.पू. पप्पाजी की 80वीं जयंती— 'भक्ति उत्सव!'

अहो हो ! महामंगलकारी दिन नज़दीक आ गया.. पराभक्ति के मूर्तिमान स्वरूप प.पू. पप्पाजी का 80वीं जयंती... उत्सव का नाम ही कैसा अनुपम, अद्‌भुत, दिव्य... 'भक्ति उत्सव'- कि सुनते ही अपने आप भीतर में भक्ति का आनंद, उमंग की लहरें हिलोरें मारने लगती हैं...

कई बार हमारी मायिक बुद्धि यह प्रश्न करती है कि भगवान अखंड धारण किए हुई ऐसी विभूतियों की यूं जयंती क्यों मनानी? पर असल में हमें ख्याल ही नहीं कि ऐसी विभूतियां हम पर अत्यधिक कृपा करके, हमसे सेवा करवा कर भक्ति अदा करने का मौका देती हैं, ताकि उस सेवा के फलस्वरूप हमारे व्यवहार के दुःख विपरीत देशकाल, प्रारब्ध बदल जाएं और साधक अपने साधना मार्ग पर आये अनेक प्रकार के प्लेटफार्म्स छोड़कर, इंद्रियां-अंतःकरण के चंगुल से मुक्त होकर रॉकेट की रफ्तार से आगे बढ़ जाएं-पर मच्छर

की तरह गरुड़ की पांख में बैठकर बिना कोई साधना किए हम अक्षरधाम में पहुंच सकते हैं, यह बात हमारे मन बुद्धि में बैठती नहीं। क्योंकि कल्पना से परे की यह बात है....

ब्रह्मस्वरूप स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी के पिताश्री को कहा था–**'डॉक्टर तुम्हारे दोनों बेटे महामुक्त हैं।'** अक्षरधाम से महामुक्तों अधिकतर चार प्रकार से आते हैं। महाराज के प्रत्यक्षस्वरूप के सर्वोपरिभाव का दृढ़ ठहराव न होने के कारण कई शुभवासना लेकर आते हैं। इनके लिए महाराज ने अंबरीष दीक्षा का या प्रियवृत का मार्ग दिखाया और गुरु गुणातीत ने प्रतिपादित भी किया। तथा... यूं शुद्धिकरण होने पर वह परम एकांतिक की स्थिति को पाता है।

दूसरे प्रकार के मुक्त-सत्संग के विशिष्ट कार्य करने निमित्त मिशन लेकर आते हैं और वे भी उनके शुभ-संकल्प से अलौकिक कार्य करके वे पूरे होने पर परम एकांतिकों के समागम से वापिस मुड़कर-कसर टाल कर ब्राह्मीस्थिति को पाते हैं।

तीसरे प्रकार के मुक्त आज्ञा से आते हैं और स्वामिश्रीजी के अभिप्राय के मुताबिक विशिष्ट कार्य करते हैं। वे स्वतंत्ररूप से आते हैं, स्वाधीन वर्तते हैं और स्वाधीनता से वापिस भी जाते हैं। ऐसे समर्थ वे होते हैं। फिर भी, लंबे अरसे तक प्रत्यक्ष दिव्य विग्रह स्वरूपों की दृष्टि और प्रसंग के बिना रहने पर जड़ संज्ञा को भी पा जायें। उनके लिए मूर्ति की स्मृति गई या मूर्ति के सिवा कोई भी शुभ संकल्प उठा-वही जड़संज्ञा !

और चौथे प्रकार के-उत्तम प्रकार के महामुक्त-सिद्ध एकांतिक-सिर्फ निर्दोषबुद्धि की मूर्ति में रहकर जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने कार्य करते हैं। संबंध में आए हुए को निर्गुणभाव में ले जाने ही उनकी पल-पल की क्रियाएं होती हैं। उनके आध्यात्मिक संकल्प से जीवन अंतर्दृष्टि करता हुआ मूल अज्ञान से निवृत्त होता है। केवल आत्मा और परमात्मा ही रहते हैं। प्रत्यक्ष स्वरूप की निष्ठा कराने का और स्वयं जैसी पहचान कराने का कार्य ऐसे अनादि महामुक्तों करते हैं। मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने ऐसे तीन प्रतीकरूप-पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी और पू. अदाश्री मूर्तिमान करे थे-यह हम जानते हैं और प.पू. योगीजी महाराज ने ऐसी परम एकांतिक दिव्य विभूतियों की एक विरासत हमें दी है.... इनमें से हैं– **प.पू. पप्पाजी** !

खूब छोटे थे तब से पृथ्वी पर स्वर्ग उतार लेने का पू. काकाजी व पू. पप्पाजी इन दोनों भाईयों का संकल्प था... दोनों भाईयों का बचपन से ध्येय था कि जीवन की प्रत्येक पल में प्रभुता प्रगटे ! और आज स्वयं प्रभु के अखंड धारक बनकर संबंध में आये हर एक चैतन्य का जीवन 'स्वर्ग' ही क्या-'अक्षरधाम' बनाया। कल्पना से परे की बात साकार करी ! बचपन से ही प.पू. पप्पाजी की तटस्थ विचारधारा ! 18 वर्ष की छोटी आयु में परिवार के सुख हेतु मोम्बासा (अफ्रीका) गए। वहां भी ज्यादा समय ध्यान में बिताते।

1952 में जब प.पू. काकाजी को साक्षात्कार हुआ तो सब के मुंह से 'दादुभाई पागल हो गए वगैरह.....' अलग-अलग बातें सुनने पर प.पू. पप्पाजी वापिस भारत लौटे और.... प.पू. बापा ने तो अपना कार्य कराने उन्हें चुन ही रखा था.... उस समय बापा के स्वरूप की अनुभूति हुई और बापा ने आज्ञा करी-

(1) भारत में रहो...
(2) प.पू. काकाजी के साथ 'ऐग्री' में काम करना,
(3) किसी का देखना नहीं...
और आखिर ....
बहनों के भगवान भजने का भगीरथ कार्य सौंपा....

गुरुहरि योगीजी महाराज को ब्रह्म-परब्रह्म का सदा दिव्य साकार प्रगट स्वरूप मानकर प.पू. पप्पाजी जीवन की पल-पल जीये। अमहिमा और मनुष्यभाव के विचार उठने नहीं दिए, बल्कि अल्प संबंध वालों में दिव्यभाव रखकर सेवा की। मुंबई में कोठारी की सेवा संभाली, केन्द्र का-मंदिर का हिसाब-किताब संभाला। उत्सवों में जायें या बापा जब मुंबई पधारते तब सुचारूरूप से सारी व्यवस्था करते और साथ के संतों की-हरिभक्तों की एक बारात की भांति सेवा करते-कराते। बापा ने बहनों की, संतों की जो सेवा सौंपी वह उद्धवजी की दृष्टि से-अपरंपार महिमा से संभाली... उसमें ही परमानंद माना और संबंध वालों को मनवाया ! संबंध में जो आये उनके जीवन में रस लेकर, निर्दोषभाव दृढ़ करवा दिया और समग्र समाज की महिमा से सेवा करवा कर दिव्य रूपांतर के मार्ग पर अग्रसर कर दिया। स्वरूपनिष्ठा की दृढ़ता पर ही तो प्राप्ति का आधार है ! वह निष्ठा करनी और करवानी-बापा का वह कार्य करके उन्होंने बापा का वारसा संभाला है।

ऐसे आध्यात्मिक पुरुष की महिमा हम कैसे समझ सकते हैं? प.पू. काकाजी की परावाणी में कई बार सुना था कि **तुम अंधे लोग-यानि मन, बुद्धि से लिप्त तुम ऐसे विभूति पुरषों को क्या समझ पाओगे**... उन्हें तो उनकी समकक्षा वाले ही सम्यक् पहचान सकते हैं।

तो, आश्रितों के जीवन में एकदम स्थूल लेवल पर आकर, रसबस होकर, सहज ही-मुमुक्षु को पता भी नहीं चले और उसे वृत्ति-स्वभाव, ग्रंथियों से पर करके सहज आध्यात्मिक

जीवन जीता कर देने वाले युग पुरुष का प्रशस्तिगान हम कर भी क्या पायेंगे, उनके जीवन में नितरते प्रेम के सिवाय और कुछ नहीं होता।

उनके गुणों, प्रतिभा और उनकी दिव्यशक्ति का वर्णन करना यानि कीड़ी व कुंजर, दीपक व सूर्य, लहर व समुद्र के मिलन जैसा माना जाए। हम सब तो इन पुरुषों के पास **उमंग से सिर्फ हां-हां** ही कर सकते हैं और उसके लिए स्मृतियज्ञ करते हुए हम उनके कितने ही अद्वितीय गुणों में से उनकी महिमा का विचार करेंगे तो हमें ऐसा प्रकाश-बल, शांति-आनंद प्राप्त होगा... ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत को स्थल, काल, जाति, व्यक्ति तथा गुण का भेद होता ही नहीं। तो, आईए शुद्धभाव से महाराज, स्वामी और गुणातीत पुरुष की हाजिरी मानकर हम प.पू. काकाजी महाराज द्वारा बताया स्मृतियज्ञ करें।

❁ **प.पू. पप्पाजी यानि सर्वमान्य स्वधर्म का राजा...** उनके लिए आत्मा का स्वधर्म और सुहृदभाव पर्यायवाचक शब्द हैं। एक-दूसरे में ओतप्रोत हैं। उनके स्वधर्म का अर्थ खास करके आत्मा व परमात्मा, ब्रह्म व परब्रह्म की एकता का सूचक है। मूर्ति भूलें नहीं, भावफेर हो ही नहीं, दिव्यता अखंड रहे और सरलभाव से, विनम्रभाव से वर्तकर पलपल आनंद अनुभव करना-वह है उनका मूलभूत आत्मा के स्वधर्म का अभेददृष्टि युक्त परमपद ! **पर, ऐसे पुरुष को उनकी समकक्षा वाले ही सम्यक् पहचान सकते हैं, वर्ना बहुत बार हमारी मेंढक बुद्धि के कारण, नासमझी या गलतफहमी भी खड़ी हो जाती है। सो उनके इस रहस्य को ऐसे अनुभूति वाले विभूतिपुरुषों के पास समझ लेना चाहिए। क्योंकि ये जैसे स्वधर्म के राजा हैं, वैसे ही सुहृदभाव के भी राजा हैं। प.पू. पप्पाजी का एक सनातन सूत्र है ही कि-''संप, सुहृदभाव, एकत्व रखकर जो हो, वह करना है।''**.... और फलस्वरूप आज एक एकांतिक भक्तों का-जीवन मुक्तों का समाज उनके द्वारा तैयार हो रहा है।

❁ **प.पू. बापा के प्रति उनकी अप्रतिम प्रमाणिकता sincerity और एकांतिक वफादारी सब मुक्तों के जीवन के लिए खास आदर्शरूप है।**

जब से प.पू. पप्पाजी को प.पू. बापा की दृष्टा के रूप में प्रतीति हुई तब से उन्होंने प.पू. बापा का दिया 40 वर्षों का एक ही सूत्र-'सुहृदभाव' का सूत्र अपने जीवन में पक्का कर लिया और खुद का समग्रतंत्र प्रभुमय-प्रभुप्रेरित बना दिया। गरजु साधकों के लिए उनका अल्पप्रसंग भी इस प्रकार जीवन परिवर्तित कर देता है। जैसी जिसकी श्रद्धा व विश्वास। मुख्यरूप से मन का छल व दिल की सच्चाई यदि साधक समझ ले तो उनके पास से खूब स्पष्ट मार्गदर्शन मिल सकता है। **प.पू. पप्पाजी को किसी भी प्रकार का दिखावा, बनावट, दंभ या प्रदर्शन पसंद ही नहीं है।** इस बारे में खूब स्पष्टवक्ता हैं व बेहिचक वर्तते हैं। हमें अच्छा लगे या न लगे, पर केवल महाराज व पू. बापा की ओर दृष्टि रखकर वे स्वरूपप्रेरणा को ही नज़र में रखकर निर्देश करते हैं। सो जब उनके पास जायें तब खूब खुले दिल से व मानसिक प्रमाणिकता से जाना चाहिए। तो वे एक ही प्रसंग में हमारे जीव पर चोट लगा देंगे-मूर्ति दे देंगे। सत्संग की परिभाषा में हमारा **साक्षी भेद** देंगे।

❁ **प.पू. पप्पाजी की 'ट्रस्टीशिप' की जो भावना है वह विरल ही है।** इसलिए उन पर भरोसा करने वाले के जीव की सर्वप्रकार से रक्षा होती है व होगी ही। इसी कारण ही तो उनके साथीदार व समकक्षा वालों के साथ वे सहिष्णुता से वर्त सकते हैं... और सबसे मिलजुल कर गुणातीत बाग का विकास कर रहे हैं। तो हम विनम्रभाव से ऐसे बड़े पुरुषों के चरणों में शीश झुकाकर दीनता से उच्चारण करें.... हज़ारों लाखों वंदन इस दिव्यविभूति पुरुष के चरणों में.....

एक दिव्य पुरुष के रूप में साधक के जीवन में वे कैसा कार्य करते हैं-वह भी एक साधक के शब्दों में ही पढ़ें... 'उनकी अविरत अमृतधारा, केवल जीव को ही निहारती दिव्यदृष्टि, आमंत्रण या सत्कार की राह देखे बिना अनंत आशक्तियों के ढेर में भगवान भजने की एक छोटी-सी रुचि खूब बड़ी मानकर अतिकृपा करके-मार्ग बनाकर वे जीव में बैठ गए। जीव को कहां खबर थी कि निश्चयरूपी गर्भ बापा छोड़ गए ! यह निश्चय ही धीरे-धीरे मायिकभाव में से दिव्यभाव में पलटता गया। प्रारब्ध की परवाह किए बिना जीव के लिए जरूरी संबंध, संजोग बनाते गए और शुद्धिकरण के दौरान मैंने उनकी असीम धीरज, कार्यकुशलता, हिमालय जैसी अडिगता और अमाप निश्चिंतता का दर्शन किया। ऊपर से हमारे में अत्यधिक रसिक होते दिखाई देकर भीतर में रही निर्लेपता, निःस्पृहीता, निःस्पंदी, निराली भक्ति निर्व्याज प्रेम भी देखा है। आज जब मूर्ति में रहकर काम करने का प्रयत्न कर रहे हैं तब उनकी प्रतिभाशक्ति का पलपल स्मरण होता है। मूर्ति में रहकर काम करने की जाग्रतता या प्रयत्न में से हम जब बार-बार चूक ही जाते हैं, तब एक विचार आ जाता है.. अहो! उन्होंने तो कितनी स्वाधीनता से, निडरता से जीव को पकड़ा। हम तो हमारी रीत से वर्ते उस पर ही प्रसन्नता की बौछार बरसाते हैं। पर उन्होंने हमारा क्या देखा? गरज में गड्डे, श्रद्धा में सूखा, विश्वास में विरोध-एतराज, देवताओं के साथ के रिश्ते, भजन में तो लट्टू जैसे, बुद्धि के बैल, उत्साह में उज्जड़... यूं उन्होंने हमारे में जिस ओर भी देखा होगा, वहां सूखा रेगिस्तान ही दिखाई पड़ा होगा। आज उनकी क्या महिमा गायें? शब्द नहीं

मिलते। इतना ही कहा जा सकता है कि आपने हमारा रोना-धोना, एतराज विरोध की ओर देखे बिना-उसके बदले में बल देकर हल्के फूल कर दिए। धन्य है आपको....'

यूं प.पू. पप्पाजी ने संतों, युवकों, बहनों व गृहस्थों में जो एकांतिकी भक्ति प्रगटाई है.. यह उनकी अनुपम विशिष्टता व सर्वोपरिता है और जो एक अद्‌भुत ब्रह्मनियंत्रित समाज का निर्माण किया है, उसके द्वारा अब लाखों मनुष्यों का कल्याण होगा !

प्रवृत्तिशील समाज में रहते हुए भी, निर्लेप मस्ती का साक्षात् स्वरूप हैं। उनके संकल्प-विकल्प में या रहने-करने में-कार्य आदि करने में अखंड निष्कामधर्म ही दिखाई पड़ता है। उनकी विलक्षण परावाणी के रूप में ब्राह्मीशक्ति साकाररूप से खुली होकर श्रेयार्थी साधकों को तत्काल ब्रह्मरूप कर सके, ऐसा है। परन्तु कसर हमारी खुद की ही है। ऐसा दृढ़ आध्यात्मिक संबंध हम बना नहीं पाते और उन्हें हमें अनेक प्रसंगों में से गुजारना पड़ता है। ऐसी विभूतियां सीधे-सीधे हमें नहीं कहें, पर यदि अंतर से-दिल की सच्चाई से प्रमाणिकरूप से सचमुच मांगेंगे-पुकारेंगे तो वो तत्काल ही सब अपने जिम्मे लेकर खुश होकर हमारी प्रकृति और स्वभाव का रुपांतर शुरू कर देंगे.. बल भी वो ही देते हैं और किसी के भी भावफेर में जरा भी ना पड़े वैसी सूझ-बुद्धियोग भी पलपल देकर हमारी रक्षा करते ही हैं।

पर, जैसी अपनी भावना वैसी-वैसी हमें प्राप्ति.... इस कहावत के मुताबिक सच्चे साधक को स्थिति करने के लिए कोई महोब्बत या सिफारिश इस बारे में चलती नहीं। गुणातीत का यह अचल नियम है। सो, यदि हमारा दृढ़ संकल्प ही हो, दिव्यजीवन जीना ही हो तो गुणातीत समाज में आज जगह-जगह ऐसे आध्यात्मिक केन्द्र चल रहे हैं जहां ऐसा आध्यात्मिक विकास व स्वरूपलक्षी स्थितप्रज्ञता वाली महामंगलकारी अवस्था ऐसे स्वरूप अत्यंत परिश्रम करके अपनी-अपनी रीत से सबको श्रद्धा के मुताबिक दे रहे हैं। तो, अब आत्मा की भूख को संतोष कराने का कार्य जल्दी पूरा हो जाए ऐसा दृढ़ संकल्प करें.. और बल देने तो वो बैठे ही हैं। इसलिए अंतिम रहस्यरूप में एक ही बात है कि-

ऐसे विभूति पुरुषों में-
किसी भी प्रकार की तारतम्यता-
भेददृष्टि
या
पद निर्माण
या
एक देशस्थभाव
आने नहीं दें,
तो ही हमारे में ऐसी परम पवित्रता आ पायेगी-
यह सिद्धांतिक बात है।
तो ऐसी परम एकांतिक दिव्य विभूतियों के साथ अंतराय रहित वर्तकर जल्दी से जल्दी अपनी पूर्णाहुति करा लेने की अभिप्सा हमें रखनी है।

प.पू. पप्पाजी कहते हैं.. तुम अंतर से मांगो और तत्काल कार्य शुरू हो जाएगा.. तो अब पूर्णाहुति होने तक दूसरों को समझाने का या सत्संग करा देने का मोह छोड़कर जहां और जो भगवान व ऐसे परम एकांतिक पुरुष करायें उतना ही उनकी अनुवृत्ति मुताबिक मन, कर्म, वचन से करने की रुचि रखेंगे तो मंदिर की निर्गुण क्रियाएं या सत्संग की अन्य प्रवृत्तियों में हम बंधे नहीं जायेंगे।

उनकी 80वीं जयंती पर आध्यात्मिक सुहृदभाव-भावात्मक एकता का हम सब दृढ़ संकल्प करें वह परम सेवा मानी जायेगी। संबंध वालों के प्रति जब तक हमें-
थोड़ी भी दूरी-पर्दा रहता है,
क्षोभ रहता है,
अलगाव जैसा लगता है
तब तक स्वरूपलक्षी सुहृदभाव रखा नहीं माना जायेगा। तो केवल उनके अनुग्रह से ऐसा दिव्यजीवन अक्षरधामरूप बनकर-जहां हो वहां-जहां रखें वहां जीने उनकी रीत से हांजी-हांजी करके धन्य बने, ऐसा बल वे ही दें यही उनके चरणों में प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

बाईस साल पहले...!

(प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी की हीरक जयंती के मंगलमय अवसर पर ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी का डेढ़ मिनिट का ऐतिहासिक संदेशा)

एक बार बोले-साक्षात् गुणातीत कहता है आज-
'हे रहुगण राजा तू अकोविद है (अज्ञानी है)।'
दोबारा कहता है-
'हे रहुगण राजा तू अकोविद है (अज्ञानी है)।'
तीसरी बार गुणातीत साक्षात् कहता है-
'हे रहुगण राजा तू अकोविद है (अज्ञानी है)।'

योगीजी महाराज के वह सत्यसंकल्प से यह सब कुछ हो रहा है, होने वाला है, होगा। वह शुद्ध गुरुपरंपरा को बिल्कुल

सहज भी भूले बिना-रंचमात्र, शास्त्री महाराज और योगी महाराज की इस भूमिका को रंचमात्र-ज़रा भी भूले बिना एक आध्यात्मिक विकास हुआ, परिवर्तन का भी प्रारंभ हुआ और वह पूर्णाहुति हो गई।

दूसरा तबका शुरू हुआ। धन्यवाद मेरे साथीदारों को, धन्यवाद तुम सभी हरिभक्तों को (जो) सद्भावना रखकर संतों, बहनों की सेवा करी। उसमें से पके जो सत्पुरुषों-स्वरूपों, अक्षरब्रह्म के-वह तेज का सुख, शांति, आनंद, बल ले रहे हैं, ठीक है। सिद्धदशा है, अच्छी है।

इससे एक विशिष्ट-अपरिमित आध्यात्मिक सुख की पराकाष्ठा के बाद, एक चैतन्य पराकाष्ठा का-सहजानंद का-परमानंद का वह सुख, वह शांति, आनंद और बल-उसकी पूर्वभूमिका-ये स्वरूपों खूब-खूब अंतदृष्टि करके जिन साथीदारों और सद्भावना वाले हरिभक्तों ने खूब-खूब साथ दिया है, उनके लिए प्रार्थना करें; गायों का ग्वाल उन्हें खूब बल दे इतनी ही प्रार्थना।

-प.पू. काकाजी महाराज
1 सितं. 1974

चलो सांकरदा... भक्ति उत्सव मनायें!

जीवन की परम धन्यता-अनमोल स्मृति हेतु
'भक्ति उत्सव' के रूप में प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी की 80वीं जयंती
गुणातीत समाज के ज्योतिर्धरों प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी,
प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. हरिभाई साहेब की निश्रा में
'सांकरदा' (अक्षरपुरुषोत्तम सत्संग केन्द्र)-गुजरात में
दि. 15, 16, 17 नवम्बर-तीन दिन
समग्र गुणातीत समाज भव्यता से मना रहा है.....
तो आईये, हम सभी 'सांकरदा' जाकर
दर्शन, सेवा, समागम का अद्भुत लाभ लेकर
भक्ति अदा करें व आशीर्वाद प्राप्त करें।

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	7.11.96	गुरुवार	–	एकादशी, व्रत
2. दि.	8.11.96	शुक्रवार	–	धनतेरस
3. दि.	10.11.96	रविवार	–	दीपावली, लक्ष्मी-शारदा पूजन
4. दि.	11.11.96	सोमवार	–	अन्नकूटोत्सव, नूतनवर्ष प्रारम्भ (अनिर्देश मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज व गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के समक्ष वार्षिक महाभोग लगाकर 11.45 को आरती करेंगे)
5. दि.	12.11.96	मंगलवार	–	भैयादूज
6. दि.	15.11.96	शुक्रवार	–	लाभ पंचमी
7. दि.	16.11.96	शनिवार	–	प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी की 80वीं जयंती
8. दि.	17.11.96	रविवार	–	सांकरदा में मनायेंगे।
9. दि.	21.11.96	गुरुवार	–	प्रबोधिनी एकादशी, व्रत
10. दि.	25.11.96	सोमवार	–	कार्तिक पूर्णिमा

PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed by : Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053